

नमो नमो निम्मलदंसणस्स  
पूज्य आनंद-क्षमा-ललित-सुशील-सुधर्मसागर गुरुभ्यो नमः

# On Line – आगममंजूषा

[२६] महापचकखाणं

\* संकलन एवं प्रस्तुतकर्ता \*

मुनि दीपरत्नसागर [M.Com., M.Ed., Ph.D.]

## ॥ किंचित् प्रास्ताविकम् ॥

ये आगम-मंजूषा का संपादन आजसे ७० वर्ष पूर्व अर्थात् वीर संवत् २४६८, विक्रम संवत्-१९९८, ई.स.1942 के दौरान हुआ था, जिनका संपादन पूज्य आगमोद्धारक आचार्यश्री [आनंदसागरसूरिजी](#) म.सा.ने किया था। आज तक उन्ही के प्रस्थापित-मार्ग की रोशनी में सब अपनी-अपनी दिशाएँ ढूँढते आगे बढ़ रहे हैं।

हम ७० साल के बाद आज ई.स.-2012, विक्रम संवत्-२०६८, वीर संवत्-२५३८ में वो ही आगम-मंजूषा को कुछ उपयोगी परिवर्तनों के साथ इंटरनेट के माध्यम से सर्वथा सर्वप्रथम “**OnLine-आगममंजूषा**” नाम से प्रस्तुत कर रहे हैं।

**\* मूल आगम-मंजूषा के संपादन की किंचित् भिन्नता का स्वीकार \***

- [१] आवश्यक सूत्र-(आगम-४०) में केवल मूल सूत्र नहीं है, मूल सूत्रों के साथ निर्युक्ति भी सामिल की गई है।  
[२] जीतकल्प सूत्र-(आगम-३८) में भी केवल मूल सूत्र नहीं है, मूलसूत्रों के साथ भाष्य भी सामिल किया है।  
[३] जीतकल्प सूत्र-(आगम-३८) का वैकल्पिक सूत्र जो “पंचकल्प” है, उनके भाष्य को यहाँ सामिल किया गया है।

[४] “ओघनिर्युक्ति”-(आगम-४१) के वैकल्पिक आगम “पिंडनिर्युक्ति” को यहाँ समाविष्ट तो किया है, लेकिन उनका मुद्रण-स्थान बदल गया है।

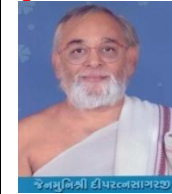
[५] “कल्प(बारसा)सूत्र” को भी मूल आगममंजूषा में सामिल किया गया है।

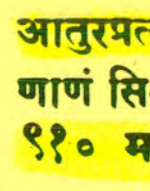
**-मुनि दीपरत्नसागर**

: Address:-

**Mnui Deepratnasagar,**  
**MangalDeep society, Opp.DholeswarMandir,**  
**POST:- THANGADH Dist.surendranagar.**  
**Mobile:-9825967397** [jainmunideepratnasagar@gmail.com](mailto:jainmunideepratnasagar@gmail.com)

मुनि दीपरत्नसागर





आतुरप्रत्याख्यानम् २। ३१११४१ → श्रीमहाप्रत्याख्यानप्रकीर्णकम्-एस करेमि पणामं तित्थयराणं अणुत्तरगईणं । सव्वेसिं च जिणाणं सिद्धाणं संजयाणं च ॥ १ ॥ १ ३ ४ ॥ सव्वदुक्खप्पही  
णाणं सिद्धाणं अरहओ नमो । सइहे जिणपत्तं पच्चक्खामि य पावगं ॥ २ ॥ जं किंचिवि दुच्चरियं तमहं निंदामि सव्वमाषेणं । सामाइयं च तिविहं करेमि सव्वं निरागारं ॥ ३ ॥ बाहिरुमं-  
११० महाप्रत्याख्यानं, ७११६१-१-३

मुनि दीपरत्नसागर



तरं उवहिं, सरीरादि सभोअणं। मणसा वयकाएणं, सब्बं तिविहेण वोसिरे ॥ ४ ॥ रागबंधं पओसं च, हरिसं दीणभावयं। उस्सुअत्तं भयं सोगं, रइमरइं च वोसिरे ॥ ५ ॥ रोसेण पडिनिवेसेण अकयण्णुयाए तहेवऽसज्झाए। जो मे किंचिवि भणिओ तमहं ( प्र० तिविहं ) तिविहेण खामेमि ॥ ६ ॥ खामेमि सब्बजीवे, सब्बे जीवा खमंतु मे। आसाओ ( आसवे ) वोसिरित्ताणं, समाहिं पडिसंधए ॥ ७ ॥ निंदामि निंदणिज्जं गरिहामि य जं च मे गरहणिज्जं। आलोएमि य सब्बं जिणेहिं जं जं च पडिसिद्धं ( प्र० कुट्टं ) ॥ ८ ॥ उवही सरीरगं चव, आहारं च चउ-  
 विहं। ममत्तं सब्बद्वेषु, परिजाणामि केवलं ॥ ९ ॥ ममत्तं परिजाणामि, निम्ममत्ते उवट्टिओ। आलंबणं च मे आया, अवसेसं च वोसिरे ॥ १० ॥ आया मे जं नाणे आया मे दंसणे चरित्ते य। आया पच्चक्खाणे आया मे संजमे जोगे ॥ १ ॥ मूलगुणे उत्तरगुणे जे मे नाराहिया पमाएणं। ते सब्बे निंदामि पडिक्कमे आगमिस्साणं ॥ २ ॥ इक्कोऽहं नत्थि मे कोई, न चाहमवि कस्सई। एवं अदीणमणसो, अप्पाणमणुसासए ॥ ३ ॥ इक्को उप्पज्जए जीवो, इक्को चव विक्कई। इक्कस्स होइ मरणं, इक्को सिज्झइ नीरओ ॥ ४ ॥ एक्को करेइ कम्मं फलमवि तस्सिक्कओ समणुहवइ। इक्को जायइ मरइ परलोअं इक्कओ जाइ ॥ ५ ॥ इक्को मे सासओ अप्पा, नाणदंसणसंजुओ ( प्र० लक्खणो )। सेसा मे बाहिरा भावा, सब्बे संजोगलक्खणा ॥ ६ ॥ संजोगमूला जीवेण, पत्ता दुक्खपरंपरा। तम्हा संजोगसंबंधं, सब्बं तिविहेण वोसिरे ॥ ७ ॥ अस्संजममण्णाणं मिच्छत्तं सब्बओऽवि य ममत्तं। जीवेषु अजीवेषु य तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ८ ॥ मि-  
 च्छत्तं परिजाणामि सब्बं अस्संजमं अलीयं च। सब्बत्तो य ममत्तं चयामि सब्बं खमावेमि ( प्र० च खामेमि ) ॥ ९ ॥ जे मे जाणंति जिणा अवराहा जेसु जेसु ठाणेषु। तं तह आलोएमी उवट्टिओ सब्बभावेणं ॥ २० ॥ उप्पन्नाणुप्पन्ना माया अणुमग्गओ निहंतवा। आलोयणनिंदणगरिहणाहिं न पुणत्ति या बीयं ॥ १ ॥ जह बालो जंपन्तो कज्जमकज्जं च उज्जुयं भणइ। तं तह आलोइज्जा मायामयविप्पमुक्को उ ॥ २ ॥ सोही उज्जुयभूयस्स, धम्मो सुद्धस्स चिट्ठइ। निब्बाणं परमं जाइ, घयसित्तुव पावए ॥ ३ ॥ न हु सिज्झई ससल्लो जह भणियं सासणे धुयरयाणं। उद्धरियसब्सल्लो सिज्झइ जीवो धुअकिलेसो ॥ ४ ॥ सुबहुंपि भावसल्लं आलोएऊण ( जे आलोयंति ) गुरुसगासंमि। निस्सल्ला संधारगमुविति आराहगा हुंति ॥ ५ ॥ अप्पंपि भावसल्लं जे नालोयंति गुरुसगासंमि। धंतंपि सुयसमिद्धा न हु ते आराहगा हुंति ॥ ६ ॥ नवि तं सत्थं च विसं च दुप्पउत्तो व कुणइ वेयालो। जंतं व दुप्पउत्तं सप्पुव्व पमायओ कुद्धो ॥ ७ ॥ जं कुणइ भावसल्लं अणुद्वियं उत्तमट्टकालंमि। दुद्धुभबोहीयत्तं अणंतसंसारियत्तं च ॥ ८ ॥ तो उद्धरंति गारवरहिया मूलं पुणभवलयणं। मिच्छादंसणसल्लं मायासल्लं नियणं च ॥ ९ ॥ कयपा-  
 वोऽवि मणूसो आलोइय निंदिओ ( निन्दिउं ) गुरुसगासे। होइ अइरेगलहुओ ओहरियभरुव्व भारवहो ॥ ३० ॥ तस्स य पायच्छित्तं जं मग्गविऊ गुरु उवइसंति। तं तह अणुसरियव्वं अणवत्थपसंगभीएण ॥ १ ॥ दसदोसविप्पमुक्कं तम्हा सब्बं अगूहमाणेणं। जंकिंपि कयमकज्जं तं जहवत्तं कहेयव्वं ॥ २ ॥ सब्बं पाणारंभं पच्चक्खामि य अलियवयणं च। सब्बमदिन्नादाणं अब्बंभपरिग्गहं चव ॥ ३ ॥ सब्बंपि असणपाणं चउव्विहं जो य बाहिरो उवही। अब्भितरं च उवहिं सब्बं तिविहेण वोसिरे ॥ ४ ॥ कंतारे दुब्भिक्खे आयंके व महई समुप्पन्ने। जं पालियं न भग्गं तं जाणसु पालणासुद्धं ॥ ५ ॥ रागेण व दोसेण व परिणामेण व न दूसियं जं तु। तं खलु पच्चक्खाणं भावविसुद्धं मुणेषव्वं ॥ ६ ॥ पीयं थणअच्छीरं सागरसल्लिलाउ बहुतरं हुज्जा। संसारंमि अणंते माईणं अन्नमन्नाणं ॥ ७ ॥ बहुसोऽवि मए रुण्णं पुणो २ तासु २ जाईसु। नयणोदयंपि जाणसु बहुययरं सागरजलाओ ॥ ८ ॥ नत्थि किर सो पएसो लोए वालग्गको-  
 डिमित्तोऽवि। संसारे संसरंतो जत्थ न जाओ मओ वावि ॥ ९ ॥ चुलसीई किल लोए जोणीपमुहाइं सयसहस्साइं। इक्किक्कंमि य इत्तो अणंतखुत्तो समुप्पन्नो ॥ ४० ॥ उड्ढमहे तिरि-  
 यंमि य मयाइं बहुयाइं बालमरणाइं। तो ताइं संभरंतो पंडियमरणं मरीहामि ॥ १ ॥ माया मित्ति पिया मे भाया भगिणी य पुत्त धूया य। एयाईं असंभरंतो पंडियमरणं मरीहामि ॥ २ ॥ मायापिइबंधूहिं संसारत्थेहिं पूरिओ लोगो। बहुजोणिवासिएहिं न य ते ताणं च सरणं च ॥ ३ ॥ इक्को करेइ कम्मं इक्को अणुहवइ दुक्कयविवागं। इक्को संसरइ जिओ जरमरणचउग्ग-  
 ईगुविलं ॥ ४ ॥ उव्वेयणयं जम्मणमरणं नरएसु वेयणाओ वा। एयाइं संभरंतो पंडियमरणं मरीहामि ॥ ५ ॥ उव्वेयणयं जम्मणमरणं तिरिएसु वेयणाओ वा। एयाइं ० ॥ ६ ॥ उव्वेयणयं ० मणुएसु ०। एयाइं ० ॥ ७ ॥ उव्वेयणयं ० चवणं च देवलोगाओ। एयाइं ० ॥ ८ ॥ इक्कं पंडियमरणं छिंदइ जाईसयाइं बहुआइं। तं मरणं मरियव्वं जेण मओ सम्मओ होइ ॥ ९ ॥ कइया णु तं सुमरणं पंडियमरणं जिणेहिं पण्णत्तं। सुद्धो उद्वियसल्लो पाओवगओ मरीहामि ? ॥ ५० ॥ भवसंसारे सब्बे चउव्विहा पुग्गला मए बद्धा। परिणामपसंगेणं अट्टविहे कम्मसंघाए ॥ १ ॥ संसारचक्कवाले सब्बे ते पुग्गला मए बहुसो। आहारिया य परिणामिया य न यऽहं गओ तित्ति ॥ २ ॥ आहारनिमित्तेणं अहयं सब्बेषु नरयलोएसु। उववण्णोमि य बहुसो सव्वासु य मिच्छजाईसु ॥ ३ ॥ आहारनिमित्तेणं मच्छा गच्छंति दारुणे नरए। सच्चित्तो आहारो न खमो मणसावि पत्थेउं ॥ ४ ॥ तणकट्टेण व अग्गी लवणजलो वा नईसहस्सेहिं। न इमो जीवो सक्को तिप्पेउं कामभोगेहिं ॥ ५ ॥ तणकट्टेण व ०। न इमो जीवो ० अत्थसारेणं ॥ ६ ॥ तणकट्टेण ०। न इमो ० भोअणविहीए ॥ ७ ॥ वलयामुहसामाणो दुप्पारो व णरओ अपरिमिज्जो। न



इमो जीवो सक्को तप्पेउं गंधमल्लेहिं ॥ ८ ॥ अवियद्धो(अवितत्तो)ऽयं जीवो अईयकालम्मि आगमिस्साए । सहाण य रूवाण य गंधाण रसाण फासाणं ॥ ९ ॥ कप्पतरुसंभवेसुं देवुत्तरकुरुवं-  
सप्पसूएसु । उववाएण य तित्तो न य नरविजाहरसुरेसुं ॥ ६० ॥ खइएण व पीएण व न य एसो ताइओ हवइ अप्पा । जह दुग्गइं न वच्चइ तो नूनं ताइओ होइ ॥ १ ॥ देविंदचक्कवट्टि-  
त्तणाइं रजाइं उत्तमा भोगा । पत्तो अणंतखुत्तो न यऽहं तित्तिं गओ तेहिं ॥ २ ॥ खीरदगेच्छुरसेसुं साऊसु महोदहीसु बहुसोऽवि । उववण्णा ण य तण्हा छिन्ना मे सीयलजलेणं ॥ ३ ॥  
तिविहेण य सुहमउलं तम्हा कामरइविसयसुक्खाणं । बहुसो सुहमणुभूयं न य सुहतण्हा परिच्छिण्णा ॥ ४ ॥ जा काइ पत्थणाओ कया मए रागदोसवसयेण । पडिबंधेण बहुविहा तं निंदे  
तं च गरिहामि ॥ ५ ॥ हंतूण मोहजालं छित्तूण य अट्टकम्मसंकलियं । जम्मणमरणऽरहट्टं भित्तूण भवा विमुच्चिहिसि ॥ ६ ॥ पंच य महव्वयाइं तिविहंतिविहेण चारुहेऊण । मणवयण-  
कायगुत्तो सज्जो मरणं पडिच्छिज्जा ॥ ७ ॥ कोहं माणं माया लोहं पिज्जं तहेव दोसं च । चइऊण अप्पमत्तो रक्खामि महव्वए पंच ॥ ८ ॥ कलहं अब्भक्खाणं पेसुण्णंपि य परस्स परिवायं ।  
परिवज्जंतो गुत्तो रक्खामि ० ॥ ९ ॥ पंचिंदियसंवरणं पंचेब निरुंभिऊण कामगुणे । अच्चासायणभीओ रक्खामि ० ॥ १० ॥ किण्हानीलाकाऊलेसा-झाणाइं अट्टरुहाइं । परिवज्जंतो गुत्तो ०  
॥ १ ॥ तेऊपम्हासुक्का लेसा झाणाइं धम्मसुक्काइं । उवसंपन्नो जुत्तो ० ॥ २ ॥ मणसा मणसच्चविऊ वायासच्चेण करणसच्चेण । तिविहेणवि सच्चविऊ रक्खामि ० ॥ ३ ॥ सत्तभयविप्पमुक्को  
चत्तारि निरुंभिऊण य कसाए । अट्टमयट्टाणजट्ठो रक्खामि ० ॥ ४ ॥ गुत्तीओ समिई भावणाउ नाणं च दंसणं च । उवसंपन्नो जुत्तो ० ॥ ५ ॥ एवं तिदंडविरओ तिकरणसुद्धो तिसल्लनि-  
स्सल्लो । तिविहेण अप्पमत्तो रक्खामि ० ॥ ६ ॥ संगं परिजाणामि सल्लं तिविहेण उद्धरेऊणं । गुत्तीओ समिईओ मज्झं ताणं च सरणं च ॥ ७ ॥ जह खुहियं चक्कवाले पोयं रयणभरियं  
समुद्धंमि । निज्जामगा धरिंती कयकरणा बुद्धिसंपण्णा ॥ ८ ॥ तवपोयं गुणभरियं परीसहुम्मीहिं खुहिउमारद्धं । तह आराहिति विऊ उवएसवलंबगा धीरा ॥ ९ ॥ जइ ताव ते सुपुरिसा  
आयारोवियभरा निरवयक्खा । पब्भारकंदरगया साहंती अप्पणो अट्टं ॥ ८० ॥ जइ ताव ते सुपुरिसा गिरिकंदरकडगविसमदुग्गेसु । धिइधणियबद्धकच्छा साहिंती अप्पणो अट्टं ॥ १ ॥  
किं पुण अणगारसहायगेण अण्णुणसंगहबलेणं । परलोए णहि सक्को साहेउं अप्पणो अट्टं ? ॥ २ ॥ जिणवयणमप्पमेयं महुरं कण्णाहुइं सुणंतेणं । सक्को हु साहुमज्झे साहेउं अप्पणो अट्टं  
॥ ३ ॥ धीरपुरिसपण्णत्तं सप्पुरिसनिसेवियं परमघोरं । धन्ना सिलायलगया साहिंती अप्पणो अट्टं ॥ ४ ॥ बाहिति इंदियाइं पुव्वमकारियपइण्णचारीणं । अकयपरिकम्मकीवा मरणे सुहसं-  
गता(प्र० चा)यंमि ॥ ५ ॥ पुव्वमकारियजोगो समाहिकामो य मरणकालंमि । न भवइ परीसहसहो विसयसुहसमुइओ अप्पा ॥ ६ ॥ पुव्वि कारियजोगो समाहिकामो य मरणकालंमि ।  
स भवइ परीसहसहो विसयसुहनिवारिओ अप्पा ॥ ७ ॥ पुव्वि कारियजोगो अनियाणो ईहिऊण मइपुव्वं । ताहे मलियकसाओ सज्जो मरणं पडिच्छिज्जा ॥ ८ ॥ पावीणं पावाणं कम्माणं  
अप्पणो सकम्माणं । सक्का पलाइउं जे तवेण सम्मं पउत्तेणं ॥ ९ ॥ इक्कं पंडियमरणं पडिवज्जिय सुपुरिसो असंभंतो । खिप्पं सो मरणाणं काही अंतं अणंताणं ॥ १० ॥ किं तं पंडियमरणं ?  
काणि व आलंबणाणि भणियाणि ? । एयाइं नाऊणं किं आयरिया पसंसंति ? ॥ १ ॥ अणसणपाओवगमं आलंबणझाणभावणाओ अ । एयाइं नाऊणं पंडियमरणं पसंसंति ॥ २ ॥ इंदि-  
यसुहसाउलओ घोरपरीसहपराइयपरज्झो । अकयपरिकम्मकीवो मुज्झइ आराहणाकाले ॥ ३ ॥ लजाइ गारवेण य बहुसुयमएण वावि दुच्चरियं । जे न कहंति गुरूणं न हु ते आराहगा  
हुंति ॥ ४ ॥ सुज्झइ दुक्करकारी जाणइ मग्गंति पावए कित्तिं । अणिगूहिंतो णिंदइ तम्हा आराहणा सेया ॥ ५ ॥ नवि कारणं तणमओ संथारो नवि य फासुया भूमी । अप्पा खलु संथारो  
होइ विसुद्धं मणो जस्स ॥ ६ ॥ जिणवयणअणुगया मे होउ सहा झाणजोगमल्लीणा । जह तंमि देसकाले अमूढसन्नो चयइ देहं ॥ ७ ॥ जाहे होइ पमत्तो जिणवयणरहिओ अणाउत्तो ।  
ताहे इंदियचोरा करिंति तवसंजमविलोवं ॥ ८ ॥ जिणवयणमणुगयमई जं वेलं होइ संवरपविट्ठो । अग्गीव वाउसहिओ समूलडालं डहइ कम्मं ॥ ९ ॥ जह डहइ वाउसहिओ अग्गी रुक्खे-  
वि हरियवणखंडे । तह पुरिसकारसहिओ नाणी कम्मं खयं णेई ॥ १०० ॥ जं अन्नाणी कम्मं खवेइ बहुआहिं वासकोडीहिं । तं नाणी तिहिं गुत्तो खवेइ ऊसासमित्तेणं ॥ १ ॥ न हु मर-  
णंमि उवग्गे सक्को बारसविहो सुयक्खंधो । सव्वो अणुचित्तेउं धणियंपि समत्थचित्तेणं ॥ २ ॥ इक्कंमिवि जंमि पए संवेगं कुणइ वीयरायमए । सो तेण मोहजालं छिंदइ अज्झप्पओगेणं  
॥ ३ ॥ इक्कंमिवि ० । तं तस्स होइ नाणं जेण विरागत्तणमुवेइ ॥ ४ ॥ इक्कंमिवि ० । चइइ नरो अभिक्खं तं मरणं तेण मरियव्वं ॥ ५ ॥ जेण विरागो जायइ तं तं सव्वायरेण कायव्वं । मुच्चइ हु  
संवेगी अणंतओ होअसंवेगी ॥ ६ ॥ धम्मं जिणपन्नत्तं सम्ममिणं सहहामि तिविहेणं । तसथावरभूअहियं पंथं निव्वाणनगरस्स ॥ ७ ॥ समणो मित्ति य पढमं बीयं सब्बत्थ संजओ मित्ति ।  
सव्वं च वोसिरामि जिणेहिं जं जं च पडिकुट्टं ॥ ८ ॥ उवही सरीरगं चैव, आहारं च चउव्विहं । मणसावयकाएणं, वोसिरामित्ति भावओ ॥ ९ ॥ मणसा अचित्तिणज्जं सव्वं भासाइ अभा-  
सणिज्जं च । काएण अकरणिज्जं सव्वं तिविहेण वोसिरे ॥ ११० ॥ अस्संजमत्तोसणं ( प्र० अस्संजमे विरमणं ) उवही विवेगकरणं उवसमो ( य ) । अप्पडिरुवजोगविरओ खंती मुत्ती  
विवेगो य ॥ १ ॥ एयं पच्चक्खाणं आउरजण आवईसु भावेण । अण्णयरं पडिवण्णो जंपंतो पावइ समाहिं ॥ २ ॥ एयंसि निमित्तंमी पच्चक्खाऊण जइ करे कालं । तो पच्चखाइयव्वं (२२८)



इमेण इकेणवि पएणं ॥ ३ ॥ मम मंगलमरिहंता सिद्धा साहू सुयं च धम्मो य । तेसिं सरणोवगओ सावज्जं वोसिरामित्ति ॥ ४ ॥ अरहंता मंगलं मज्झ, अरहंता मज्झ देवया । अरहंते  
 कित्तइत्ताणं, वोसिरामित्ति पावगं ॥ ५ ॥ सिद्धा य मंगलं मज्झ, सिद्धा य मज्झ देवया । सिद्धे य कित्त० ॥ ६ ॥ आयरिया मंगलं मज्झ, आयरिया मज्झ देवया । आयरिए कित्त० ॥ ७ ॥  
 उज्झाया मंगलं मज्झ, उज्झाया मज्झ देवया । उज्झाए कित्त० ॥ ८ ॥ साहू य मंगलं मज्झ, साहू य मज्झ देवया । साहू य कित्त० ॥ ९ ॥ सिद्धे उवसंपण्णो अरहंते केवळित्ति भावेणं ।  
 इत्तो एगयरेणवि पएण आराहओ होइ ॥ १२० ॥ समुइण्णवयणओ पुण समणो हियएण किंपि चिंतिज्जा । आलंबणाइं काइं काऊण मुणी दुहं सहइ ? ॥ १ ॥ वेयणासु उइत्तासु, किं मे  
 सत्तं निवेयए । किं वा आलंबणं किच्चा, तं दुक्खमहियासए ? ॥ २ ॥ अणुत्तरेसु नरएसु, वेयणाओ अणुत्तरा । पमाए वट्टमाणेणं, मए पत्ता अणंतसो ॥ ३ ॥ मए कयं इमं कम्मं, समा-  
 सज्ज अबोहियं । पोरणगं इमं कम्मं, मए पत्तं अणंतसो ॥ ४ ॥ ताहिं दुक्खविवागाहिं, उवचिण्णाहिं तहिं २ । न य जीवो अजीवो उ, कयपुट्ठो उ चिंतए ॥ ५ ॥ अब्भुज्जयं विहारं इत्थं  
 जिणएसियं विउपसत्थं । नाउं महापुरिससेवियं च अब्भुज्जयं मरणं ॥ ६ ॥ जह पच्छिमंमि काले पच्छिमत्थियरदेसियमुयारं । पच्छा निच्छयपत्थं उवेमि अब्भुज्जयं मरणं ॥ ७ ॥ बत्ती-  
 समंडियाहिं कडजोगी जोगसंगहबलेणं । उज्जमिऊण य बारसविहेण तवणेहपाणेणं ॥ ८ ॥ संसारंगमज्झे धिइबलववसायबद्धकच्छाओ । हंतूण मोहमल्लं हराहि आराहणपडागं ॥ ९ ॥  
 पोरणगं च कम्मं खवेइ अन्नं नवं च न चिणाइ । कम्मकलंकलवल्लिं (प्र० लिवत्तिं) छिंदइ संथारमारूढो ॥ १३० ॥ आराहणोवउत्तो सम्मं काऊण सुविहिओ कालं । उक्कोसं तिन्नि  
 भवे गंतूण लभिज्ज निव्वाणं ॥ १ ॥ धीरपुरिसपन्नत्तं सप्पुरिसनिसेवियं परमधोरं । ओइण्णो हु सि रंगं हरसु पडायं अविग्घेणं ॥ २ ॥ धीर ! पडागाहरणं करेह जह तंमि देसकालंमि । सुत्त-  
 त्थमणुगुणंतो धिइनिच्चलबद्धकच्छाओ ॥ ३ ॥ चत्तारि कसाए तिन्नि गारवे पंच इंदियग्गामे । हंता परीसहचमूं हराहि आराहणपडागं ॥ ४ ॥ माऽऽया ! हु व चिंतिज्जा जीवामि चिरं  
 मरामि व लहुंति । जइ इच्छसि तरिउं जे संसारमहोअहिमपारं ॥ ५ ॥ जइ इच्छसि नित्थरिउं सब्बेसिं चेव पावकम्माणं । जिणवयणनाणदंसणचरित्तभावुज्जुओ जग्ग ॥ ६ ॥ दंसणनाणच-  
 रित्तं तवे य आराहणा चउक्खंधा । सा चेव होइ तिविहा उक्कोसा मज्झिम जहन्ना ॥ ७ ॥ आराहेऊण विऊ उक्कोसाराहणं चउक्खंधं । कम्मरयविप्पमुक्को तेणेव भवेण सिज्झिज्जा  
 ॥ ८ ॥ आराहेऊण विऊ जहन्नमाराहणं चउक्खंधं । सत्तट्टभवग्गहणं परिणामेऊण सिज्झिज्जा ॥ ९ ॥ सम्मं मे सब्भूएसु, वेरं मज्झ न केणई । खामेमि सब्बजीवे, खमामिऽहं सब्बजीवाणं  
 ॥ १४० ॥ धीरेणवि मरियव्वं काउरिसेणवि अवस्स मरियव्वं । दुण्हंपि य मरणाणं वरं खु धीरत्तणे मरिउं ॥ १ ॥ एयं पच्चक्खाणं अणुपालेऊण सुविहिओ सम्मं । वेमाणो व देवो हविज्ज  
 अहवावि सिज्झिज्जा ॥ १४२ ॥ २७५ ॥ इति महापच्चक्खाणपइण्णं ३ ॥ ३१११-२९ → श्रीभक्तपरिज्ञाप्रकीर्णकम्-नमिऊण महाइसयं महाणुभावं मुणिं महावीरं । भणिमो भत्तप-